हिन्दी : कक्षा-10

मॉडल सेट-01

समय 3 घंटा 15 मिनट **पूर्णांक-100**

परीक्षार्थियों के लिए सामान्य निर्देशः-

(क) परीक्षार्थी यथासम्भव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

(ख) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(ग) उत्तर देते समय शब्द-सीमा का ध्यान रखें।

(घ) दाहिनी ओर अंक निर्दिष्ट किये गये हैं।

(च) प्रश्न-पत्र को ध्यान से पढ़ें। इसके लिए 15 मिनट का अतिरिक्त समय दिया जा रहा है।

प्रश्न 1. (अ) निम्नलिखित अपठित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर नीचे दिए प्रश्नों के उत्तर दें। 6X2=12

एक गुरुकुल था, विशाल और प्रख्यात। उसके आचार्य भी बहुत विद्वान थे। एक दिन आचार्य ने सभी छात्रों को आँगन में एकत्रित किया और उनके सामने एक समस्या रखी कि उन्हें अपनी कन्या के विवाह के लिए धन की आवश्यकता है। कुछ धनी परिवार के बालकों ने अपने घर से धन लाकर देने की बात कही। किन्तु गुरुजी ने कहा कि इस तरह तो आपके घर वाले मुझे लालची समझेंगे। फिर गुरुजी ने एक उपाय बताया कि सभी विद्यार्थी चुपचाप अपने-अपने घरों से धन लाकर दें तो मेरी समस्या सुलझ जाएगी लेकिन यह बात किसी को पता नहीं चलनी चाहिए। सभी छात्र तैयार हो गये। इस तरह गुरुजी के पास धन आना शुरू हो गया। एक बालक कुछ नहीं लाया। गुरुजी ने उससे पूछा कि क्या उसे गुरु की सेवा नहीं करनी चाहिए? उसने उत्तर दिया, 'ऐसी कोई बात नहीं है, लेकिन मुझे ऐसी कोई जगह नहीं मिलती जहां कोई न देख रहा हो'। गुरुजी ने कहा "कभी तो ऐसा समय आता होगा जहां कोई न देख रहा हो गुरुजी का भी ऐसा आदेश था। तब वह बालक बोला "गुरुदेव ठीक है, पर ऐसे स्थान में कोई रहे-न-रहे मैं तो वहाँ रहता हूँ। कोई दूसरा देखे-न-देखे मैं स्वयं तो अपने कुकर्मों को देखता हूँ। "आचार्य ने गले लगाते हुए कहा तू मेरा सच्चा शिष्य है क्योंकि तूने गुरु के कहने पर भी चोरी नहीं की। यह तेरे सच्चे चरित्र का सबूत है।" तू ही मेरी कन्या का

सच्चा और योग्य वर है। गुरुजी ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया। विद्या ऊँचे चरित्र का निर्माण करती है और उन्नति के शिखर पर ले जाती है।

(क) आचार्य ने अपने शिष्यों को बुलाकर क्या कहा?

(ख) कुछ न ला सकने वाले शिष्य पर आचार्य क्यों प्रसन्न हुए?

(ग) आचार्य को किस धन की खोज थी? वह उन्हें किस रूप में मिला?

(घ) गुरुकुल के आचार्य किस प्रकार के व्यक्ति थे?

(च) लोग उन्नति के शिखर पर कैसे पहुँचते हैं?

(छ) इस गद्यांश का उचित शोर्षक दें।

(ब) निम्नलिखित गद्यांश को पढ़ कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें। 4 X 2=8

मनुष्य उत्सवप्रिय होते हैं। उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनंद की प्राप्ति है। यह तो सभी जानते हैं कि मनुष्य अपनी आवश्यकता की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है। आवश्यकता की पूर्ति होने पर सभी को सुख होता है पर उस सुख और उत्सव के आनंद में बड़ा फर्क है। आवश्यकता भाव सूचित करती है। उससे यह प्रकट होता है कि हममें किस बात की कमी है। मनुष्य जीवन ही ऐसा है कि वह किसी भी अवस्था में यह अनुभव नहीं कर सकता कि अब इसके लिए कोइ आवश्यकता नहीं रह गई है। एक के बाद दूसरी वस्तु की चिंता उसे सताती रहती है, इसलिए किसी एक आवश्यकता की पूर्ति से उसे जो सुख होता है, वह अत्यंत क्षणिक होता है क्योंकि तुरंत ही दूसरी आवश्यकता उपस्थित हो जाती है। उत्सव में हम किसी बात की आवश्यकता का अनुभव नहीं करते। यह आनंद जीवन का आनंद है, काम का नहीं।

(क) मनुष्य किसलिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है?

(ख) उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य क्या है?

(ग) मनुष्य को एक के बाद दूसरी चिंता क्यों सताती रहती है?

(घ) आवश्यकतापूर्ति का सुख क्षणिक क्यों होता है?

प्रश्न-2 दिये गये संकेत बिन्दुओं के आधार पर किसी एक विषय पर लगभग 250 शब्दों में निबंध लिखें। 10

(अ) बिहार तब और अब

(क) भूमिका

(ख) अतीत

(ग) विभाजन

(घ) सामाजिक-आर्थिक एवं शैक्षणिक प्रगति

(च) उपलब्धियाँ।

(ब) कश्मीर समस्या

(क) समस्या का इतिहास

(ख) अलगाववादियों की भूमिका

(ग) लोगों की दशा

(घ) समस्या का निदान

(च) उपसंहार।

(स) खेल का महत्त्व

(क) भूमिका

(ख) खेल के प्रति दृष्टिकोण

(ग) खेल के प्रकार

(घ) महत्त्व

(च) लाभ-हानि, उपसंहार।

प्रश्न-3 अपने मित्र के पास एक पत्र लिखें जिसमें विद्यालय में आयोजित की गई विज्ञान-प्रदर्शनी का वर्णन हो। 5

अथवा

महल्ले में फैले डेंगू के प्रकोप से बचाने के लिए नगर-निगम के मेयर के पास समुचित उपाय हेतु एक आवेदन- पत्र लिखें।

प्रश्न-4 कारक के कितने भेद होते हैं? भेदों का वर्णन पहचान-चिह्मों सहित करें। 5

अथवा

शब्द किसे कहते कहते हैं? उत्पत्ति के विचार से शब्द के भेदों का वर्णन करें।

प्रश्न-5 रिक्त स्थानों की पूर्ति करें। 5x1= 5

(क) किसी भी वर्ण का उच्चारण...............के भिन्न अंगों से होता है।

(ख) मेरी निर्धनता पर दया करो (भाववाचक संज्ञा चुनें)........।

(ग) प्रतिकूल का विलोम.............. होता है।

(घ) 'प' का उच्चारण-स्थान......................होता है।

(च) तेल..........................वाचक संज्ञा है।

प्रश्न-6 निम्नलिखित अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करें: **5x1= 5**

(क) उसका प्राण सूख गया है।

(ख) सबलोग अपनी राय दें।

(ग) मोहन को काट कर सेब खिलाओ।

(घ) घड़ा पानी से खचाखच है।

(च) राम ने रोटी खाया।

प्रश्न-7 स्तम्भ 'अ' और स्तम्भ 'ब' का सही मिलान सामने-सामने लिखकर करें।

6x1= 6

स्तम्भ-अ	**स्तम्भ-ब**
1. नागरी लिपि	क. जीवनानंद दास
2. स्वदेशी	ख. हजारी प्रसाद द्विवेदी
3. लौट कर फिर आऊँगा	ग. सुजाता
4. नाखून क्यों बढ़ते हैं	घ. राम विलास शर्मा
5. नगर	च़ गुणाकर मूले
6. परंपरा का मूल्यांकन	छ. वद्रीनारायण प्रेमधन

निर्देश :- प्रश्न संख्या 8 से 19 तक के प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों में दें।

प्रश्न-8 डुमराँव की महत्ता किस कारण से है? 3

प्रश्न-9 लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना कहाँ तक संगत है? 3

प्रश्न-10 सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने किन विशेषताओं को आवश्यक माना है? 3

प्रश्न-11 पाठ में किन प्रमुख पहलुओं स जाति-प्रथा को हानिकारक प्रथा के रूप में दिखाया गया है? 3

प्रश्न-12 निम्नलिखित गद्यांश को पढ़कर नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर दें-

मेरे मतानुसार इस प्रकार की शिक्षा-पद्धति में मस्तिष्क और आत्मा का उच्चतम विकास संभव है। इतनी ही बात है कि आजकल की तरह प्रत्येक दस्तकारी केवल यांत्रिक ढंग से न सिखा कर वैज्ञानिक ढंग से सिखानी पढ़ेगी, अर्थात् बच्चे को प्रत्येक प्रक्रिया का कारण जानना चाहिए। मैं चाहता हूँ कि सारी शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के द्वारा दी जाय।

(क) यह गद्यांश किस पाठ से उद्धृत है? 1

(ख) इस पाठ के लेखक कौन हैं? 1

(ग) आज की शिक्षा पद्धति कैसी होनी चाहिए? 3

प्रश्न-13 कृष्ण को चोर क्यों कहा गया है? कवि का अभिप्राय स्पष्ट करें 3

प्रश्न-14 छायाएँ दिशाहीन सब ओर क्यों पड़ती हैं? स्पष्ट करें। 3

प्रश्न-15 वृक्ष और कवि में क्या सम्वाद होता था? 3

प्रश्न-16 शानदार लबादा किसका गिर जाएगा और क्यों? 3

प्रश्न-17 निम्नलिखित पद्य को पढ़ कर दिये गये प्रश्नों के उत्तर दें-

लेकिन होता भूडोल बवण्डर उठते हैं,
जनता जब को पाकुल हो भृकुटी चढ़ाती है:
दो राह समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिहांसन खाली करो कि जनता आती है।

हुँकारों से महलों की नींव उखड़ जाती है।
साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है
जनता की रोके राह समय में ताव कहाँ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

(क) कविता और कवि का नाम लिखें। 1

(ख) अबोध जनता जब कुपित होती है तो क्या होता है? 1

(ग) क्या जनता का वेग किसी के रोके रुकता है? 3

प्रश्न-18 सीता अपने ही घर में क्यों घुटन महसूस करती है? 3

प्रश्न-19 पप्पाति कौन थी और वह शहर क्यों लाई गई थी? 3

प्रश्न-20 भारत के संयुक्त परिवार को आप उपयोगी मानते हैं या नहीं तर्कसहित अपने विचार लिखें। 4

उत्तर मॉडल सेट-01

उत्तर 1 (अ)

(क) आचार्य ने अपने शिष्यों को बुलाकर कहा कि मुझे अपनी कन्या के विवाह के लिए धन चाहिए। तुम सभी चुपचाप अपने-अपने घर से धन ला कर दोगे तो मेरी समस्या सुलझ जाएगी।

(ख) कुछ न ला सकने वाले शिष्य पर आचार्य इसलिए प्रसन्न हुए क्योंकि वह आत्मज्ञानी और सच्चरित्र था।

(ग) आचार्य को चरित्रधन की खोज थी। उन्हें यह धन उस शिष्य के रूप में प्राप्त हुआ जिसने अपने आचार्य की बात न मानकर अपनी आत्मा के आदेश का पालन किया।

(घ) गुरुकुल के आचार्य आत्मज्ञानी, सच्चरित्र और विद्वान थे।

(च) लोग (आत्म) विद्या और सात्विक चरित्र के माध्यम से उन्नति के शिखर पर पहुँचते हैं।

(छ) चरित्र-निर्मात्री विद्या-सफलता का आधार।

उत्तर 1. ब

(क) मनुष्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आजीवन प्रयत्न करता रहता है।

(ख) उत्सवों का एकमात्र उद्देश्य आनंद-प्राप्ति होता है।

(ग) मनुष्य अभावों में जीता है। एक अभाव की पूर्ति होते ही दूसरा अभाव अपनी पूर्ति की माँग करने लगता है। मनुष्य अपनी एक आवश्यकता की पूर्ति करता है कि दूसरी आवश्यकता आ धमकती है। वह उसकी पूर्ति के लिए चिंतित हो उठता है।

(घ) आवश्यकता-पूर्ति का सुख क्षणिक होता है क्योंकि एक आवश्यकता की पूर्ति से प्राप्त सुख के पश्चात् दूसरी आवश्यकताओं का जन्म होता है और मनुष्य लगातार उनकी श्रृंखला में फँस कर स्थायी सुख से वंचित हो जाता है।

उत्तर 2 (अ)बिहार तब और अब

बिहार भारत का वह भू-भाग है जिसके बिना भारत के इतिहास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। राजनीति, धर्म, पांडित्य, साहित्य और अन्यान्य क्षेत्रों में इसकी महती भूमिका है।

बिहार ने ही चाणक्य जैसा अर्थशास्त्री, चंद्रगुप्त और अशोक जैसा राजा, महावीर और बुद्ध जैसा धर्म-प्रर्वतक, आर्यभट्ट जैसा वैज्ञानिक शेरशाह जैसा शासक, जीवक जैसा वैद्यराज, कुँवर सिंह जैसा साहसी वीर दिया है। गाँधी के असहयोग की भूमि भी यही है। कभी यह खनिज-सम्पदा से भी परिपूर्ण थी लेकिन हाल में झारखंड के अलग राज्य बनने से वह सम्पदा कम हो गई है। ऐसे सम्पन्न राज्य में एक समय ऐसा आया कि यहाँ कि ख्याति अपहरण, रंगदारी, बुरी सड़कें, अशिक्षा गरीबी, कुपोषण, बेरोजगारी के समुद्र के रूप में होने लगी। लोग शाम होते हो अपने घरों में दुबक जाते, किसी को पता नहीं रहता था कि कब आकर कोई रंगदारी माँगेगा, सड़कों में गड्ढ, गरीबी का क्या कहना, बेरोजगारों की तो गिनती ही नहीं । लोग दूसरे राज्यों में रोजगार के लिए भागने लगे, उद्योग धंधे बंद हो गये, बिहारी कहलाने में शर्म आती थी।

किन्तु पिछले कुछ दिनों में बदलाव दिखाई देने लगा है। चार-पाँच वर्षो के दौरान जो हुआ, उसकी सराहना सर्वत्र हुई है। पंचायतों और नगर-निकायों में महिलाओं के पचास प्रतिशत आरक्षण से माहौल बदल गया है। नारियाँ सिर उठाकर चलने लगीं हैं । वे पंच, संरपच, मुखिया एवं निगम-पार्षद हैं। लड़कियों को पोशाक और साइकिल देने की सरकार की योजनाओं से स्कूल में छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। विद्यालय-भवन बन रहे हैं। सूबे मं सड़कों और पुल-पुलियों का निर्माण हो रहा है।

अब लोग रात में घ्मने, बाजार आदि जाने से परहेज नहीं करते। अपहरण और रंगदारी की घटनाओं में कमी आयी है।

रोजगार के क्षेत्र में भी काम हुआ है। लाखों शिक्षकों की नियुक्ति हुई है। नरेगा के अंतर्गत भी काम मिलने लगा है। स्वरोजगार योजना के अंतर्गत मछलीपालन, मुर्गीपालन का कारोबार शुरू हुआ है। बैंक भी ऋण देने लगे हैं। चिकित्सा के क्षेत्र

में भी सुधार हुआ है। अस्पतालों में जीवन रक्षक औषधियाँ लोगों को उपलब्ध होने लगी हैं। डॉक्टरों की भी अस्थायी बहाली हो रही है।

यह सब हुआ है किन्तु अभी बहुत कुछ नहीं हुआ है। उद्योगों की स्थापना के मामले में हम पिछड़े ही हुए हैं। बिजली उत्पादन आवश्यकता से कम है। डॉक्टरों की कमी है, बेरोजगारी अभी बरकरार है। बिहारी प्रतिभा का लोहा दुनिया मानती है किन्तु इसे सँवारने के लिए उच्च और तकनीकी संस्थाओं की जरूरत है। बाढ़ से निजात अभी तक नहीं मिली है। किन्तु इन सबके बावजूद जो हुआ है, जो हो रहा है उससे उम्मीद बँधती है कि हमारा बिहार एक दिन अवश्य अपने अतीत के गौरव को पुन: प्राप्त करेगा।

उत्तर 2. (ब) कश्मीर समस्या

भारत का ताज कश्मीर आज भारत के गले की हड्डी बन गया है जिसकी आड़ में भारत को तबाह करने का घिनौना खेल चल रहा है।

सन् 1947 में जब देश का विभाजन धर्म के नाम पर हुआ तो कश्मीर का विलय भारत के साथ हो गया। चूँकि कुछ इलाकों में मुसलमानों की संख्या अधिक थी इसलिए पाकिस्तानी सेना ने वहाँ के लोगों की आड़ में भारतीय भू-भाग पर आक्रमण कर दिया। इसके पहले कि भारतीय सेना कारवाई करती कश्मीर का एक भू-भाग दुश्मनों के हाथ आ गया। बाद में युद्ध-विराम हुआ किन्तु तब तक कुछ भू-भाग आक्रामकों के हाथ आ चुका था, अतएव कश्मीर समस्या आ खड़ी हुई जो आज तक नहीं सुलझी।

कश्मीर में कुछ अलगावादो तत्व हैं जो पूरे कश्मीर को भारत से अलग करना चाहते हैं। उनका कहना है कि कश्मीर हमारा है। कट्टरपंथी लोग मजहब के नाम पर इसको हवा देते हैं। और पाकिस्तानी सेना इनकी सहायता करती है। ये लोग भारत की सीमा में आकर तोड़-फोड़, आगजनी और हत्या करते हैं। इनके उत्पात के चलते आज कश्मीर के लाखों हिन्दू बेघर हो कर झुग्गी-झोपड़ियों में नारकीय जीवन बसर करते हैं या राहत शिविरों में किसी तरह जीवन-यापन कर रहे हैं। वहाँ के अलगाववादी तत्वों ने वहाँ एक समुदाय विशेष के लोगों का जीना मुश्किल कर रखा है। कश्मीर जो कभी धरती का स्वर्ग कहा जाता था, आज बदतर हो गया है। कोई

भी नहीं जानता कि वहाँ आंतकवादियों की गोली कब किसके चीथड़े उड़ा देगी। वे आये दिन हमारे सुरक्षाबलों पर भी निशाना बनाते रहते हैं। आम नागरिकों और सैनिकों की हत्या आम बात हो गई है।

इस आंतकवाद का असर यह पड़ा है कि वहाँ का जन-जीवन बुरी तरह हिल गया है। उद्योग-धंधे चौपट हो गये हैं और पर्यटन-उद्योग सबसे अधिक प्रभावित हुआ है। ऐसा नहीं है कि सभी लोग उन तत्वों के साथ हैं परन्तु उनकी कमजोरी है कि वे खुलकर सामने नहीं आते।

कश्मीर-समस्या का कारण हमारी राजनीतिक इच्छाशक्ति का अभाव भी है जिसके कारण कठोर कार्रवाई नहीं होती। वोट की राजनीति के कारण कठोर कदम नहीं उठाये जाते।

किन्तु अब समय आ गया है कि कश्मीर में घुसे आतंकवादियों और पाकिस्तानियों से इतनी सख्ती से निपटा जाय कि उनकी पीढ़ियाँ भी इधर रुख करने का नाम न लें। अगर तत्काल ऐसा नहीं हुआ तो राजनेताओं को देश कभी क्षमा नहीं करेगा।

उत्तर 2. (स) खेल का महत्त्व

खेल प्राय: सभी जीवों को प्रिय है। कहा भी गया है कि ईश्वर ने लीला के लिए ही सृष्टि का निर्माण किया। यह लीला क्या है? खेल ही तो है।

प्राचीन ग्रंथों में अवतारी पुरुषों को भी बचपन में 'खेलत खात' दिखाया गया है, चाहे राम हों या कृष्ण। बाद में जब जीवन-संघर्ष कठिन हो गया तो लोगों ने अपने बच्चों को बताना शुरू किया कि 'खेलोगो कूदोगे होगे खराब, पढ़ोगे लिखोगे होगे नवाब'। नतीजतन लोग किताबी कीड़ा बनते गये और स्वास्थ्य चौपट कर लिया लेकिन अब समय बदल रहा है। पहले हुई गलती को लोगों ने सुधार लिया है और खेल-खेल में शिक्षा देने की व्यवस्था की गई है। प्रारंभिक कक्षाओं में यही विधि अपनाई गई है और इसके अच्छे परिणाम निकले हैं।

खेल अनेक प्रकार के होते हैं। कुछ खेल मैदान में खेले जाते हैं, कुछ घरों में और कुछ पानी में। क्रिकेट, वॉलीबॉल, फुटबॉल, कबड्डी, पोलो, हॉकी आदि खेल मैदान में खेले जाते हैं, और कैरम, शतरंज लूडो आदि प्राय: घरों में खेले जाते हैं।

बैडमिंटन, टेनिस, बास्केटबॉल आदि मैदान में भी खेले जाते हैं और डनडोर स्टेडियम में भी।

खेल का महत्त्व अनेक दृष्टियों से है। पहली बात तो यह है कि इसमें भाग-दौड़ करने से शरीर चुस्त-दुरुस्त होता है और स्फूर्ति आती है जो स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक है। दूसरी बात यह है कि खेल से प्रतियोगिता की भावना पैदा होती है जो जीवन में जरूरी है। तीसरी बात यह है कि इससे परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होती है और त्याग की भावना का भी विकास होता है क्योंकि खिलाड़ी अपने लिए ही नहीं पूरी टीम के लिए खेलता है और कभी अपने विद्यालय, नगर, राज्य और देश के लिए भी। उसका सम्मान, स्थान या देश से भी जुड़ जाता है। सबसे बड़ी बात यह है कि खेल से समय और आत्म-नियंत्रण का भाव उत्पन्न होता है।

स्पष्ट है कि खेल का हमारे जीवन में व्यक्तित्व एवं सर्वांगीण विकास के लिए महत्त्वपूर्ण स्थान है। यही कारण है कि राज्य सरकारें इस पर ध्यान देने लगीं हैं। राष्ट्रीय स्तर पर खेलनीति बनने लगी है। इसके फलस्वरूप खेल धीरे-धीरे व्यवसाय का रूप लेने लगे हैं। क्रिकेट, टेनिस और फुटबॉल के खिलाड़ी करोड़ों का वारा न्यारा करने लगे हैं। क्रिकेट, टेनिस में जीत-हार पर जुआबाजी होने लगी है। और खिलाड़ी जीत हार के लिए पैसे लेने लगे हैं कुछ खिलाड़ी तो जीत के लिए नशीली दवाएँ भी लेते हैं। यह दुखद स्थिति है और खेल-भावना के विपरीत और शर्मनाक है।

वस्तुतः खेलों को खेल के रूप में स्वास्थ्य एवं जीवन-विकास को सीढ़ी के रूप में ही लेना चाहिए। इसी में खेल की सार्थकता है।

उत्तर 3-

प्रिय रमेश **बिक्रम, पटना**

नमस्ते । **28/01/2016**

आशा करता हूँ तुम स्वस्थ एवं सानंद होगे। तुमने मेरे विद्यालय में आयोजित विज्ञान-प्रदर्शनी के संबंध में जानकारी लेनी चाही है। मैं इस पत्र में संक्षेप में तुम्हें यह जानकारी दे रहा हूँ।

मेरे विद्यालय में 22 जनवरी 2016 से 24 जनवरी 2016 तक विज्ञान-प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इस आयोजन में विद्यालय के संस्थापक और शिक्षकों ने अपनी-अपनी

भूमिका का निर्वाह किया। इसमें छात्रों ने भी बढ-चढ़कर हिस्सा लिया। तुम्हें मालूम ही है कि मेरे विद्यालय के प्रधानाचार्य ने 22 जनवरी को विज्ञान-प्रदर्शनी के शुभारंभ का प्रस्ताव विद्यालय विकास समिति के सम्मुख रखा जिसे सर्वसम्पति से स्वीकार किया गया।

22 जनवरी 2016 को जिलाधिकारी ने प्रदर्शनी का उद्घाटन किया और विज्ञान-प्रदर्शनी की उपयोगिता पर संक्षिप्त भाषण किया। प्रदर्शनी देखने काफी लोग आये थे। इनमें निकटवर्ती गाँवों के किसानों तथा आसपास के विद्यालयों के शिक्षकों-छात्रों की संख्या काफी थी। विभिन्न कमरों में तरह-तरह के वैज्ञानिक उपकरण लगाये गये थे जिनके संबंध में वहाँ उपस्थित प्रशिक्षित छात्र लोगों को जानकारी दे रहे थे। वातावरण में अभूतपूर्व उत्साह था। मेरे विद्यालय में इस तरह के आयोजन का यह पहला मौका था। यह लगातार तीन दिनों तक चला।

24 जनवरी को इस प्रदर्शनी का समापन हुआ। इसकी सफलता पर प्रधानाचार्य ने सबको धन्यवाद दिया। उन्होंने समापन दिवस पर यह संकल्प लिया कि अगले वर्ष 2017 में इसका आयोजन और विस्तार से किया जाएगा।

शेष कुशल है। आदरणीया चाचीजी एवं चाचाजी को मेरा सादर प्रणाम कहना। पत्रोत्तर अवश्य देना।

तुम्हारा अभिन्न मित्र
किशोर

पता- रमेश सिन्हा
कंपनीबाग, मुजफ्फरपुर (बिहार)

उत्तर 3 अथवा

सेवामें,
नगर प्रमुख (मेयर)
पटना नगर-निगम, पटना।

विषय: कंकड़बाग महल्ला में फैले डेंगू के संबंध में।

महाशय,

हम कंकड़बाग महल्ला के नागरिक आपका ध्यान महल्ले में फैले डेंगू के प्रकोप की ओर आकृष्ट करना चाहते हैं। विगत एक सप्ताह से महल्ले में फैले डेंगू के प्रकोप से हम

सभी महल्लावासी त्रस्त हैं। इस बीमारी से बचाव तथा निवारण की कोई समुचित व्यवस्था नहीं होने के कारण हम सभी किसी बड़े अनिष्ट की आशंका से भयभीत हैं।

हमारा आग्रह ह कि डेंगू के प्रकोप ले लोगों को बचाने के लिए महल्ले में सफाई की समुचित व्यवस्था कराई जाय और नगर स्थित सरकारी अस्पताल को यह आदेश दिया जाय कि वहाँ बीमारी का इलाज करा रहे लोगों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाय। इसके लिए हम सदैव आपके आभारी रहेंगे।

धन्यवाद सहित। प्रार्थी

दिनांक –25–01–2017 कंकड़बाग महल्ला के निवासी ।

उत्तर–**4** कारक के आठ भेद हैं। कर्ता कारक, कर्म कारक, करण कारक, सम्प्रदान कारक, अपादान कारक, संबंध कारक, अधिकरण कारक, संबोधन कारक।

उदाहरण–	कर्ताकारक	–	ने
	कर्मकारक	–	को
	करणकारक	–	से
	संप्रदान कारक	–	को, के लिए
	अपादान कारक	–	से (अलगाव के लिए)
	संबंध कारक	–	का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी।
	अधिकारण कारक		में, पर
	सम्बोधन कारक		हे, अजी, अहो, अरे।

उत्तर 4. अथवा

भाषा की लघुतम सार्थक इकाई को 'शब्द' कहते हैं, जैसे घर, वन आदि। उत्पत्ति या उद्गम के आधार पर शब्दों के छः भेद माने गये हैं:

(क) तत्सम – उदाहरण – क्षेत्र, मयर्

(ख) अर्द्धतत्सम – उदाहरण – करम (संस्कृत के कर्म से विकसित)

(ग) तद्भव – उदाहरण – खेत, मोर

(घ) देशज – उदाहरण – लोटा, कटोरा

(च)	विदेशज	–	उदाहरण	–	कोट, ट्रेन, स्कूल
(छ)	मिश्रित शब्द	–	उदाहरण	–	रेलगाड़ी (अंग्रेजी+हिन्दी)

उत्तर–5

क. – मुख

ख. – निर्धनता

ग. – अनुकूल

घ. – ओष्ठ

च. – द्रव्य

उत्तर–6 **शुद्ध वाक्यः–**

(क) उसके प्राण सूख गये।

(ख) सभी अपनी राय दें।

(ग) सेब काट कर माहन को खिलाओ।

(घ) घड़ा पानी से लबालब है।

(च) राम ने रोटी खायी।

उत्तर–7 (क) जीवनानंद दास

(ख) हजारी प्रसाद द्विवेदी

(ग) सुजाता

(घ) रामविलास शर्मा

(च) गुणाकर मूले

(छ) बदरीनारायण चौधरी 'प्रेमधन'

उत्तर–8 डुमराँव की महत्ता विश्वविख्यात शहनाईवादक बिस्मिल्ला खाँ के कारण है। इनका जन्म बिहार राज्य के इसी गाँव (डुमराँव) में एक संगीतप्रेमी परिवार में हुआ था।

उत्तर-9 जब मनुष्य जंगली था, बनमानुष जैसा तब उसे अपनी रक्षा के लिए नाखूनों की जरूरत थी। वास्तव में नाखून ही उसके लिए अस्त्र (हथियार) थे। वह अपने प्रतिद्वंदियों से जूझने और उन्हें परास्त करने में अपने नाखूनों की मदद लिया करता था। अत: लेखक द्वारा नाखूनों को अस्त्र के रूप में देखना सर्वथा संगत है।

उत्तर-10 सच्चे लोकतंत्र की स्थापना के लिए लेखक ने भाईचारा, सामूहिक जीवनचर्या की एक रीति तथा समाज क सम्मिलित अनुभवों के आदान-प्रदान को आवश्यक माना है। समाज में सब भाई-बहन की तरह रहें और सबमें एक-दूसरे के प्रति श्रद्धा और सम्मान का भाव रहे।

उत्तर-11 लेखक ने 'श्रम विभाजन और जातिप्रथा' पाठ में सामाजिक और आर्थिक पहलुओं से जाति-प्रथा को हानिकारक पथा के रूप में दिखाया है। यह प्रथा सामाजिक एकता एवं स्वाभाविक प्रेरणा-रुचि को समाप्त करती है।

उत्तर-12 (क) यह गद्यांश शिक्षा और संस्कृति पाठ से उद्धृत है।

(ख) इस पाठ के लेखक महात्मा गाँधी हैं।

(ग) आज की शिक्षा-पद्धति में व्यावहारिकता का महत्त्व अपेक्षित है। सारो शिक्षा किसी दस्तकारी या उद्योगों के माध्यम से दी जानी चाहिए।

उत्तर-13 कवि ने कृष्ण को 'चोर' कहा है क्योंकि कृष्ण अपने अपरूप सौन्दर्य में बाँधकर गोपियों के चित्त का हरण कर लेते हैं। दूसरों के मित्त (मन) को अपने वश में कर लेने के कारण ही कवि ने कृष्ण को चोर कहा है।

उत्तर-14. छाया, प्रकाश की दिशा की विपरीत दिशा में बनती है। उगते हुए सूर्य के प्रकाश में छायाएँ पश्चिम दिशा की बनंगी परन्तु परमाणु बम के विस्फोट से निकली सूरज की रोशनी में मानवजन की छायाएँ दिशाहीन स्थिति में सब ओर पड़ीं। उस विस्फोट स एक ही साथ विभिन्न दिशाओं से अनेक सूरज उत्पन्न हुए जिनकी रोशनी में मानवजन की छायाओं का एक निश्चित दिशा में बनना संभव नहीं था। अत: मानवजन की छायाएँ दिशाहीन हो कर सर्वत्र पड़ीं।

उत्तर-15 बूढ़ा चौकीदार वृक्ष हमारी बूढ़ो अनुभवी पीढ़ी के साथ-साथ सतकं बुद्धिजीवी वर्ग का प्रतीक है जो अच्छे-बुरे को दूर से ही पहचान लेता है। बूढ़ा

चौकीदार वृक्ष कवि को आते देख दूर से ललकार कर पूछता था, "कौन"? कवि जवाब देता था, 'दोस्त' जिसे सुनकर चौकीदार वृक्ष दोस्ती के आगे नतमस्तक हो जाता था। यह संवाद दर्शाता है कि अनुभवी बुद्धिजीवी आनेवाले हर खतरे को भाँप सकते हैं जिसे आज अनदेखा किया जा रहा है।

उत्तर-16 भक्त का अस्तित्व अगर भगवान से है तो भगवान की सत्ता भक्त द्वारा शोभायमान है। ईश्वरीय महिमा रूपी शानदार आवरण जो ईश्वर से लिपटा हुआ है, भक्त द्वारा महिमा स्वीकारने उसमें भक्ति रूपी प्राण देने से ही बना है। अत: भक्त के बिना प्रभु भक्ति रूपी लबादा से विहीन हो जाएँगे।

उत्तर-17 क- कविता-जनतंत्र का जन्म कवि-रामधारी सिंह दिनकर

ख- जनता जब कूपित होती है तो समाज में उथल-पुथल मच जाता है क्रांति होती हैं फलस्वरूप सत्ता के प्रतिष्ठान ढह जाते हैं। जो लोग सत्ता में होते हैं उनकी सत्ता छिन जाती है और कभी-कभी तो उन्हें सत्ता के साथ-साथ जान से भी हाथ धोना पड़ता है।

ग- जनता की राह रोकना बहुत कठिन है। जनता किसी के रोके नहीं रुकती। जनता समय की धारा बदल देती है। वह (जनता) अपना लक्ष्य पाकर ही रहती है।

उत्तर-18 सीता के तीन बेटे, बहुएँ और पोते-पोतियाँ हैं। मात्र बच्चों को छोड़कर किसी को उससे लगाव नहीं है। बच्चे भी जब उसके पास आ कर खेलते-कूदते हैं तो बहुएँ चीखती-चिल्लाती हैं। कोई बेटा पास आकर उसका हालचाल नहीं पूछता, न कभी कोइ आकर बैठता है। बहुएँ अक्सर जली-कटी सुनाती हैं। तीनों बेटों ने तय कर लिया है कि सीता बारी-बारी ही हरेक के यहाँ रहेगी और उसके यहाँ से खाएगी। इसी कारण सीता को अपने ही घर में घुटन महसूस होती है।

उत्तर-19 पप्पाति तमिलनाडु के एक गाँव की महिला वल्लि अम्माल की बेटी थी। उसे बुखार आ गया। जब वल्लि अम्माल उसे लेकर गाँव के प्राइमरी हेल्थ सेंटर में दिखाने गई तो वहाँ के डॉक्टर ने अगले दिन सुबह ही जाकर नगर के बड़े अस्पताल में दिखाने को कहा। बस वह पप्पाति को लेकर सुबह की बस से नगर के बड़े अस्पताल में दिखाने पहुँच गई।

उत्तर-20 पहले भारत में संयुक्त परिवार-प्रथा का प्रचलन था। संयुक्त परिवार का अर्थ है, एक परिवार में दादा-दादी, माता-पिता उनके पुत्र-पुत्री और नजदीकी परिवार के बेसहारा लोगों का सामूहिक जीवन। परिवार के मुखिया और अन्य समर्थ लोग काम-धाम करते आर परिवार का भरण-पोषण होता। दादा-दादी बच्चों की देख-रेख करते, माँ-बहनें घर के अंदरुनी काम या खेती में हाथ बँटातीं। परिवार का मुखिया सबके साथ समान व्यवहार करता, सबकी जरूरतं पूरी करता और तब परिवार सुचारू रूप से चलता। बूढ़े माँ-बाप की सेवा की जातो थी। कोई अपने को उपेक्षित नहीं समझता था। न खेत बँटते थे न आमदनी। लेकिन आज पश्चिम से आई हवा से सबकुछ उलट पुलट गया है। आज परिवार का अर्थ है मियाँ-बीबी और बच्चे। माँ-बाप कहाँ हैं? कैसी हालत में हैं? इसकी किसी को कोई चिंता नहीं हैं। खेती बँट गए, घरों में दीवार खिंच गईं वृद्धों के आश्रम खुलने लगे। शादी-व्याह में एक-दूसरे के यहाँ जाना भी जंजाल मानने लगे हैं किन्तु इसी बीच कोई अनहोनी हो जाने पर एकल परिवार की क्या दुर्वस्था होती है, यह किसी से छिपा नहीं है।

संयुक्त परिवार में यह समस्या नहीं होती थी। अन्य सभी, मुसीबत में एक साथ खड़े होते थे। हर मुकाबला सभी मिलजुल कर करते थे। इस प्रकार मेरी दृष्टि में भारत की संयुक्त परिवार-प्रथा सर्वाधिक उपयुक्त थी।